57

मसीही लोग और मानवीय सरकार

(13:1-7)

यीशु के समय में पाया जाने वाला प्रश्न था कि मसीही लोगों को सरकारी अधिकारियों के साथ कैसे जोड़ा जाना चाहिए। एक अवसर पर, यीशु के शत्रुओं ने उससे पूछा, ''क्या हमें कैसर को कर देना उचित है या नहीं ?'' (लूका 20:22)। यहूदी लोग रोमियों से घृणा करते थे और उन्हें कर दिए जाने को तुच्छ मानते थे, परन्तु यह प्रश्न वास्तव में एक फंदा था। यदि मसीह का उत्तर हां होता तो वह अपने यहूदी अनुयायियों से अलग हो जाता। यदि वह न कहता, तो उसके शत्रु रोमी राज्यपाल को खबर कर सकते थे (आयत 20)। यीशु ने एक सिक्का लिया और पूछा, ''इस पर किसकी छाप और नाम है ?'' (आयत 24क)। ''उन्होंने कहा, 'कैसर का' '' (आयत 24ख)। फिर यीशु ने कहा, ''तो जो कैसर का है, वह कैसर को दो, और जो परमेश्वर का है, वह परमेश्वर को दो'' (आयत 25)।

यहूदी लोग ''जो कैसर का है वह कैसर को देना'' *नहीं* चाहते थे। रोमियों ने उन्हें कई रियायतों के साथ अपने विश्वास को मानने की भी छूट दे रखी थी, परन्तु उनके मनों में नाराजगी खत्म नहीं हुई थी। यह घृणा बढ़ती गई जो 64 ईस्वी के यहूदी विद्रोह का कारण बनी और बाद में 70 ईस्वी में यरूशलेम के विनाश का कारण बनी।

जब पौलुस ने 57 या 58 ईस्वी के लगभग रोम की कलीयिसा के नाम लिखा, तो यहूदी नाराजगी बहुत बढ़ चुकी थी। जैसा पहले कहा गया है, उस नगर में कलीसिया में यहूदी लोग थे (2:17), वही यहूदी जिनके मन में निस्संदेह रोमी सरकार के प्रति नाराजगी थी। रोम की कलीसिया में अन्यजातियां इस बात पर अपने यहूदी भाइयों से सहमति रखती होंगी। रोम ने कुछ साल पहले रोम से यहूदियों और मसीही लोगों दोनों को निकाला था।[1]

इन और अन्य कारणों के कारण रोम के नाम अपने पत्र में पौलुस ने इस वचन को शामिल किया होगा। एक और सम्भावित कारक यह है कि कुछ मसीही लोगों को लगा होगा कि मसीह में स्वतन्त्रता (गलातियों 5:1) का अर्थ है कि अब वे व्यवस्था के अधीन *नहीं* हैं जिसमें रोम की व्यवस्था भी थी। पौलुस भी शायद वैसे सताव का ही पूर्वानुमान लगा रहा था जैसा कुछ साल बाद नीरो द्वारा हुआ, और यह कि सरकार के प्रति मसीही लोगों का व्यवहार कैसे प्रभावित होगा।

उसका मन्त्र चाहे जो भी हो, पौलुस जिसे परमेश्वर के आत्मा की प्रेरणा थी, ने यह निर्देश शामिल करने के लिए कि मानवीय सरकार के साथ अनुग्रहण से उद्धार पाए व्यक्ति का सम्बन्ध कैसा होना चाहिए, आवश्यक समझा। 1 तीमुथियुस 2:1, 2; तीतुस 3:1; और 1 पतरस 2:13, 14, 17 में भी इस विषय का उल्लेख है; परन्तु नये नियम में इस विषय पर सबसे लम्बी चर्चा रोमियों 13:1-7 वाली है। हमारे वचन पाठ में इस सम्बन्ध के हर पहलू को नहीं बताया गया है और न पूछे जा सकने वाले हर प्रश्न का उत्तर दिया गया है। तौभी ऐसे विषय पर जो हम में से हर किसी के जीवन को प्रभावित करता है यह एक महत्वपूर्ण प्रकाशन है।

जब हम मसीही बन जाते हैं तो हमें अंधकार की प्रभुता से बचाकर परमेश्वर के प्रिय पुत्र के राज्य में लाया जाता है (कुलुस्सियों 1:13)। फिर भी हम सांसारिक राज्य/देश के नागरिक तो रहते हैं। हमें सरकारी अधिकारियों से कैसे सम्बन्ध रखना चाहिए? हमारी जिम्मेदारियां क्या हैं? परमेश्वर हम से किस तरह के नागरिक होने की इच्छा करता है? ये प्रश्न हैं जिन पर पौलुस ने रोमियों 13:1-7 में चर्चा की है।[2]

अधिकार को पहचानें! (13:1, 2, 4, 6)

वचन का आरम्भ ''हर एक व्यक्ति शासकीय अधिकारियों के अधीन रहे'' (आयत 1क) को जोड़ने से होता है। इस आज्ञा तथा 13:1-7 वाली आज्ञाओं पर चर्चा आरम्भ करने से पहले हमें यह तय करने के लिए कि पौलुस ने यह विस्तारपूर्वक आज्ञा *क्यों* दी हमें इस वचन की समीक्षा करना आवश्यक है।

एक सामान्य नियम

पौलुस ने हमारे आज्ञापालन के आधार के साथ आरम्भ किया: ''क्योंकि कोई अधिकार ऐसा नहीं जो परमेश्वर की ओर से न हो; और जो अधिकार हैं वे परमेश्वर के ठहराए हुए हैं'' (आयत 1ख)। आयत 1 में ''अधिकारी'' और ''अधिकार'' शब्द *exousia* से लिए गए हैं, जो ''शक्ति का इस्तेमाल करने का अधिकार'' का संकेत देते हैं।[3] पौलुस ने कई बार स्वर्गीय जीवों की बात करने के अर्थ में *exousia* का इस्तेमाल किया (इफिसियों 6:12), जिस कारण कई लोग मानते हैं कि प्रेरित के मन में यहां ऐसी ही बात थी। परन्तु *exousia* का अर्थ कहीं और मानवीय अधिकारियों के लिए है (लूका 12:11)। रोमियों 13:6, 7 में पौलुस ने इन अधिकारियों को कर देने की बात कही, सो निश्चय ही उसके मन में मानवीय सरकार थी। जे. बी. फिलिप्स के संस्करण में ''सिविल अधिकारियों'' है, जबकि NCV में ''सरकारी हाकिमों'' है।

यह मानते हुए कि पौलुस ने नागरिक सरकार के अर्थ में कहा, आइए आगे पढ़ते हैं: ''क्योंकि कोई अधिकार ऐसा नहीं जो परमेश्वर की ओर से न हो; जो अधिकार हैं वे परमेश्वर के ठहराए हुए हैं'' (आयत 1ख)। ''ठहराए'' शब्द *tasso* से लिया गया है, जिसका अर्थ ''क्रम में लगाना, प्रबन्ध करना,'' ''नियुक्त करना''[4] या ''ठहराना'' है (देखें KJV)। आयत 4 में आगे झांकते हुए हम देखते हैं कि मानवीय सरकार को दो बार ''परमेश्वर का सेवक'' कहा गया है। आयत 6 में मानवीय हाकिमों को ''परमेश्वर के सेवक'' कहा गया है। यदि आपने कभी रोमियों 13 का अध्ययन नहीं किया है तो आपको ये बातें अनोखी या या अति लग सकती हैं। परन्तु अध्याय 9 में पीछे, पौलुस ने फिरौन का विवरण देते समय सांसारिक हाकिमों पर परमेश्वर के नियन्त्रण पर ज़ोर दिया है (आयतें 16-18)।

पौलुस यह घोषणा करने वाला कि सांसारिक हाकिम परमेश्वर की विश्वव्यापी प्रभुता के अधीन हैं, बाइबल का पहला लेखक या वक्ता नहीं था। परमेश्वर की ओर से बोलते हुए, सुलैमान ने लिखा था, ''मेरे ही द्वारा राजा राज करते हैं, और अधिकारी धर्म से विचार करते हैं; मेरे ही द्वारा राजा हाकिम'' होते हैं (नीतिवचन 8:15, 16क)। एक मूर्तिपूजक फारसी हाकिम कुस्त्रु को परमेश्वर का ''चरवाहा'' और परमेश्वर का ''अभिषिक्त'' कहा गया था (यशायाह 44:28;

45:1)।[5] दानिय्येल ने बाबुल के राजा नबुकदनेस्सर को बताया कि परमेश्वर ''राजाओं का अस्त और उदय भी'' करता है और ''परम प्रधान परमेश्वर मनुष्यों के राज्य में प्रभुता करता है'' (दानिय्येल 2:21; 4:17)।[6] जब पिलातुस के सामने यीशु की पेशी हुई तो रोमी राज्यपाल के सामने यीशु ने बताया, ''यदि तुझे ऊपर से न दिया जाता, तो तेरा मुझ पर कुछ अधिकार न होता'' (यूहन्ना 19:11क)।

सामान्य अवलोकन

परमेश्वर की प्रेरणा से दी गई इन बातों को पढ़ने पर हमारे मनों में प्रश्नों की बाढ़ सी आ जाती है। हम कालांतर और वर्तमान के दुष्ट हाकिमों पर चकित होते हैं।[7] क्या परमेश्वर ने उन्हें ठहराया? क्या उनका शासन परमेश्वर द्वारा स्थापित किया गया था। हम उठने वाले हर सवाल का जवाब नहीं दे, सिर्फ सकते परमेश्वर और मानवीय सरकारों पर हम कुछ अवलोकन कर सकते हैं।

1. *परमेश्वर ने मनुष्यजाति की भलाई के लिए सरकारी अधिकारी ठहराए।* परमेश्वर ने घर (उत्पत्ति 3) और कलीसिया (प्रेरितों 2) को बनाया और रोमियों 13 अध्याय स्पष्ट करता है कि वह मानवीय सरकार का भी देने वाला है।[8] उसने सरकारी अधिकार को बनाया क्योंकि लोगों को इसकी *आवश्यकता* है। बर्टन कॉफ़मैन ने लिखा है:

> स्थापित अधिकार ... के बिना, समस्त संसार अव्यवस्था और बर्बादी में डूब जाता। बेलगाम मानवीय स्वभाव ऐसा खूंखार जानवर है। जो ज़रा सा अवसर मिलने पर अपनी रस्सी तुड़वाने और संसार को खून और आतंक के नष्ट करने के लिए हमें हर समय तैयार रहने वाला, राज्य द्वारा लगाई गई बन्दिश में बेचैन और परेशान होता है।[9]

जैक पी. लुईस ने कहा है, ''सरकार का कोई भी रूप अराजकता से बेहतर है।''[10] हम इस बात पर तो असहमत हो सकते हैं कि कैसी सरकार सबसे बढ़िया हो सकती है और हमें इसकी कितनी अधिक या कितनी कम आवश्यकता है, पर एक बात जिस पर हम सहमत हैं वह यह है कि नागरिक अधिकार का नियम परमेश्वर का ठहराया हुआ है।

आयत 4 कहती है कि मानवीय सरकार ''तेरी भलाई के लिए परमेश्वर का सेवक है।'' फिलिप्प के संस्करण में इस प्रकार है, ''अधिकारी तेरी रक्षा के लिए परमेश्वर का सेवक है।'' रक्षा के अलावा हमारे नगर, राज्य और राष्ट्रीय सरकारें ऐसी सेवाओं के साथ हमारी भलाई के लिए काम करती हैं, जो अपने आप पाना कठिन या असम्भव होगा।[11]

2. *हर नागरिक अधिकार का अस्तित्व है क्योंकि परमेश्वर इसे अस्तित्व में रहने देता है।* हम यह नहीं कह सकते कि किसी विशेष सांसारिक शासन के लिए परमेश्वर जिम्मेदार है, पर हम इतना कह सकते हैं कि वह शासन है क्योंकि परमेश्वर उसे ऐसा रहने देता है। पुराने जमाने में तानाशाहों द्वारा अपनी प्रजा से मनमानी करते हुए उनसे अपनी बात मनवाने की कोशिश करते रोमियों 13:1-7 का दुरुपयोग हुआ था। वे यह दावा करते थे कि उनके शासन परमेश्वर की ओर से स्वीकृत है। वे रोमियों 13 से उद्धृत करते और कहते कि कलीसिया के अगुओं को उनके शैतानी कार्यक्रम को सार्वजनिक समर्थन देना चाहिए। पौलुस ने सिखाया कि परमेश्वर ने मानवीय सरकार का नियम स्थापित किया, परन्तु उसने यह *नहीं* सिखाया कि परमेश्वर व्यक्तिगत रूप से हर सरकारी

नेता को सत्ता में बिठाता है।

इस तथ्य का कि परमेश्वर ने मानवीय सरकार को स्थापित किया अर्थ क्या यह है कि वह हर सरकार को मान्यता देता है ? परमेश्वर ने घर स्थापित किया। क्या इसका अर्थ यह है कि वह हर घर को मान्यता देता है ? नहीं। परमेश्वर ने कलीसिया को स्थापित किया। क्या इसका अर्थ यह है कि हर मण्डली को मान्यता दे सकता है ? नहीं (देखें प्रकाशितवाक्य 2:4, 14, 20)। इसी प्रकार हर सरकार को परमेश्वर की व्यक्तिगत स्वीकृति की मोहर नहीं मिली है।

कोई भी सरकारी अगुआ जो लोगों से आंख मूंदकर उसकी बात मानने के लिए रोमियों 13:1-7 का इस्तेमाल करता है उसे यह समझने की ज़रूरत है कि वचन दोधारी तलवार है। यह उसे यह भी बताता है कि उसे ''परमेश्वर का सेवक'' होना आवश्यक है। सेवक होने की ज़िम्मेदारियां हैं, विशेषकर यदि सेवकाई हो![12] दानिय्येल 2:21 न तो यह कहता है कि परमेश्वर ''राजाओं का उदय'' करता है, बल्कि यह यह भी कहता है कि वह ''राजाओं का अस्त भी करता है।'' यह बात किसी भी हाकिम के लिए गम्भीरता से विचार करने वाली होनी चाहिए।

3. *परमेश्वर अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए घृणित सरकारों का इस्तेमाल भी कर सकता है।* कई जगह परमेश्वर ने अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए ईश्वर रहित जातियों का इस्तेमाल किया है। इस्राएल को दण्ड देने के लिए अश्शूर परमेश्वर के क्रोध का लठ सीरिया था (यशायाह 10:5)।[13] प्रभु ने यहूदा को इसकी बुराई का दण्ड देने के लिए बाबुल का इस्तेमाल किया था (यिर्मयाह 25:9-11)। एक और सकारात्मक बात परमेश्वर ने यहूदा को दासता से छुड़ाने के लिए कुस्त्रु का इस्तेमाल किया (यशायाह 44:28-45:7; एज्रा 1:1-4)। ये उदाहरण हमें दिखाते हैं कि परमेश्वर दुष्ट सरकारी अधिकारियों का इस्तेमाल कर *सकता* है और *कई बार* करता है। इससे आगे हम सोच नहीं सकते। हम केवल इतना जानते हैं इसी तरह परमेश्वर संसार की सरकारों पर नियन्त्रण रखता है। अन्त में, उसी के उद्देश्य पूरे होंगे।

पौलुस की शिक्षाओं के बल से बचने की कोशिश करते हुए, लोग कई बार ''अच्छी सरकारों'' और ''बुरी सरकारों'' में अन्तर करने की कोशिश करते हैं। वे कहते हैं, ''हमें केवल अच्छी सरकारों के अधीन होने की आवश्यकता है।'' रोमियों 13:1-7 का अध्ययन करते हुए हमें पौलुस के समय सत्ता में काबिज लोगों अर्थात रोमी साम्राज्य को ध्यान में रखने की आवश्यकता है। क्या रोमी साम्राज्य, ''अच्छी सरकार'' थी। कुछ पहलुओं से यह अच्छी थी;[14] पर यदि आप रोम के इतिहास से परिचित हैं, तो आपको पता है कि सरकार दुष्टता और भ्रष्टता से भरी पड़ी थी। पौलुस के लिखने के समय सम्राट नीरो था, जिसे आर. सी बेल्ल ने ''मातृ घात'' का दोषी ''अमानवीय राक्षस'' नाम दिया है।[15] इसके बावजूद, प्रेरित ने कहा, ''हर एक व्यक्ति प्रधान अधिकारियों के आधीन रहे; क्योंकि कोई अधिकार ऐसा नहीं, जो परमेश्वर की ओर से न हो'' (रोमियों 13:1क)।

सुझाव दिया गया है कि रोमियों 13 लिखने के समय पौलुस रोमी सरकार के प्रति पक्षपाती था क्योंकि वह एक रोमी नागरिक था और रोमी अधिकारियों द्वारा उसके साथ अच्छा व्यवहार किया गया था। परन्तु बाद में उसने अपना मन बदल लिया। ऐसा सुझाव ईश्वरीय प्रेरणा का इनकार है और तथ्यों को गलत पेश करना है। यह इस तथ्य को नज़रअन्दाज़ कर देता है कि रोमियों के नाम पत्री लिखने से पहले पौलुस को कैद में गैर कानूनी ढंग से डाला गया था और रोमी अधिकारियों द्वारा पीटा गया था (प्रेरितों 16:22-24)। वास्तव में तीन बार उसे बैंतों से मारा गया (2 कुरिन्थियों

11:25), जो दण्ड देने का रोमी तरीका था। इसके अलावा यह सुझाव इस तथ्य को नज़रअंदाज़ करता है कि रोमी अधिकारियों द्वारा नाजायज़ चार या इससे अधिक साल कैद में डाले जाने के बावजूद,[16] उसने ऐसे वचन लिखे जो इस प्रकार हैं।

> ... अब मैं सबसे पहले यह आग्रह करता हूं कि विनती, और प्रार्थना, और निवेदन, और धन्यवाद, सब मनुष्यों के लिए किए जाएं। राजाओं और सब ऊंचे पदवालों के निमित्त इसलिए कि हम विश्राम और चैन के साथ सारी भक्ति और गम्भीरता से जीवन बिताएं (1 तीमुथियुस 2:1, 2)।
>
> लोगों को सुधि दिला, कि हाकिमों और अधिकारियों के आधीन रहें, और उन की आज्ञा मानें (तीतुस 3:1क)।

सताव के बीच में एक और प्रेरित ने लिखा:

> प्रभु के लिए मनुष्यों के ठहराए हुए हर एक प्रबन्ध के अधीन रहो, राजा को इसलिए कि वह सब पर प्रधान है। और हाकिमों के, क्योंकि वे कुकर्मियों को दण्ड देने और सुकर्मियों की प्रशंसा के लिए उसके भेजे हुए हैं। क्योंकि परमेश्वर की इच्छा यह है, कि तुम भले काम करने से निर्बुद्धि लोगों की अज्ञानता की बातों को बन्द कर दो। और अपने आपको स्वतन्त्र जानो पर अपनी इस स्वतंत्रता को बुराई के लिए आड़ न बनाओ, परन्तु अपने आपको परमेश्वर के दास समझकर चलो। सबका आदर करो, भाइयों से प्रेम रखो, परमेश्वर से डरो, राजा का सम्मान करो (1 पतरस 2:13-17)।

नये नियम का सुसंगत संदेश यह है कि मसीही व्यक्ति ''अच्छा नागरिक बनने'' की कोशिश करे (रोमियों 13:1; MSG) राजनैतिक शक्ति की लगाम चाहे किसी के हाथ में भी हो।

अधिकार का सम्मान करें! (13:1-5)

शासन

यह ध्यान में रखते हुए कि परमेश्वर ने मानवीय सरकार स्थापित की, हम वचन में से देखते हैं। आयत 1 आरम्भ होती है, ''हर एक व्यक्ति[17] प्रधान[18] अधिकारियों के अधीन रहे'' (आयत 1क)। ''अधीन रहे'' *hupotasso* से लिया गया है जो ''अधीन पद'' (*hupo* [''अधीन''] के साथ *tasso* [''प्रबन्ध करना'']) के अर्थ वाला ''मुख्यतया सैनिक शब्द'' है।[19] कुछ अनुवादों में *hupotasso* का अनुवाद ''आज्ञा मानना'' किया गया है। इस शब्द में आज्ञा पालन सम्मिलित है, परन्तु इसका अर्थ व्यापक है। यह अपने आप में ''सहयोग, वफ़ादारी और आज्ञा मानने की इच्छा'' को समेट लेता है।[20]

जैसे लोग ''अच्छी सरकारों'' और ''बुरी सरकारों'' के बीच अन्तर करने की कोशिश करते हैं वैसे ही वह ''अच्छे नियम'' और ''बुरे नियम'' में अन्तर करने का प्रयास करते हैं। ''बुरे

नियमों'' से आम तौर पर उनका अभिप्राय वे नियम होते हैं जिनका उनके लिए कोई अर्थ नहीं या जो नियम उन्हें असुविधा देते हैं, शायद परेशानी भी। वे यह ज़ोर देते हैं, ''परमेश्वर हमसे बुरे नियमों को मानने की उम्मीद नहीं करता।'' समय-समय पर अधिकतर लोग सरकारी नियमों और पाबन्दियों से चिड़ जाते हैं। हम यातायात के नियमों, इमारतों के नियमों, कर के नियमों और दफ़्तरी कामकाज की नियमित प्रतिक्रिया से परेशान होते हैं। हम राजनैतिक अफ़सरशाही से घुटन महसूस करते हैं। तौभी हमें ''अच्छे नियमों'' और ''बुरे नियमों'' में अन्तर करने का अधिकार नहीं दिया गया है। यदि यह कानून है तो हमें इसे मानना ही पड़ेगा।

क्या इस मूल नियम का कोई अपवाद है ? एक ही अपवाद जो मुझे पता है वह पतरस के मुंह से निकला था उसे और यूहन्ना को यहूदी सभा द्वारा यीशु के नाम में सिखाने या प्रचार न करने का आदेश दिया गया था (प्रेरितों 4:18), जिस आज्ञा को उन्होंने अनदेखा कर दिया था। जब उन्हें सभा के सामने खींचकर लाया गया तो पतरस ने ये शानदार शब्द कहे थे: ''मनुष्यों की आज्ञा से बढ़कर परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना ही हमारा कर्त्तव्य है'' (प्रेरितों 5:29)। हम इस नियम को अपने इस विषय पर कितना लागू कर सकते हैं ? हमें देश के कानून का तब तक पालन करना चाहिए *जब तक वे परमेश्वर के नियमों के विरुद्ध न हों*। कई उदाहरण ध्यान में आ रहे हैं। पुराने नियम में शदरक, मेशक और अबेदनगो ने सोने की मूर्ति के सामने झुकने से इनकार कर दिया था (दानिय्येल 3) और दानिय्येल ने राजा के इस आदेश को नज़रअंदाज़ कर दिया कि किसी और से प्रार्थना न की जाए (दानिय्येल 6)। नये नियम के समय में अन्तिपास को विश्वास से मुकरने से इनकार करने के कारण शहीद कर दिया गया था (प्रकाशितवाक्य 2:13)।

इस विचार को समाप्त करने से पहले दो सच्चाइयों पर ज़ोर दिया जाना चाहिए। पहली, जब हम ''मनुष्यों की बजाय परमेश्वर की आज्ञा मानते हैं,'' परिणाम भुगतने के लिए तैयार रहना चाहिए। ध्यान करें कि प्रेरितों व शदरक, मेशक और अबेदनगो दानिय्येल और अन्तिपास के साथ क्या हुआ। दूसरा जब तक हम ईमानदारी से कानून का पालन करने वाले नहीं हैं, तो हमें ''मनुष्यों के बजाय परमेश्वर की आज्ञा मानने'' हमारे कामों को विवेक की अभिव्यक्ति के रूप में नहीं बल्कि अतिरिक्त परिणाम के रूप में देखा जाएगा कि हम गड़बड़ कराने वाले लोग हैं। पतरस ने लिखा, ''तुम में से कोई व्यक्ति हत्यारा या चोर, या कुकर्मी होने, या पराए काम में हाथ डालने के कारण दुख न पाए। पर यदि मसीही होने के कारण दुख पाए, तो लज्जित न हो, पर इस बात के लिए परमेश्वर की महिमा करे'' (1 पतरस 4:15, 16)।

यह नियम है कि जब तक कोई अन्य, सरकारी या राष्ट्रीय कानून परमेश्वर की प्रकृति के निर्देशों का उल्लंघन नहीं करता, इन्हें मानते रहें। क्या यह तर्कहीन है ? इसे मानें। क्या यह सुसंगत नहीं है ? इसे मानें। क्या यह समाज के एक भाग से पक्षपात नहीं है ? इसे मानें। जिमी एलन ने लिखा है, ''हमारा मुख्य ध्यान यह नहीं है कि क्या कानून बुरा है ?'' बल्कि यह है कि कानून को मानने के लिए क्या परमेश्वर के वचन का उल्लंघन होता है (प्रेरितों 4:19) ? तब तक उन्हें बुराई करने के लिए विवश नहीं किया जाता तब तक चेले उस कानून को मानेंगे जो उन पर परेशानियां लाता है।[21]

कारण

1. *परमेश्वर ने मानवीय प्रबन्ध को बनाया।* हमें सरकारी अधिकारियों के अधीन होना *क्यों* आवश्यक है। हमने पहले ही इसके पहले कारण पर ज़ोर दिया है कि मानवीय प्रबन्ध की स्थापना करने वाला परमेश्वर ही है। ''क्योंकि कोई अधिकार ऐसा नहीं, जो परमेश्वर की ओर से न हो; और जो अधिकार हैं, वे परमेश्वर के ठहराए हुए हैं। इस से जो कोई अधिकार का विरोध करता है, वह परमेश्वर की विधि का सामना करता है (13:1ख, 2क)।'' SEB में इस प्रकार है, ''सो यदि कोई अधिकार के विरुद्ध विद्रोह करता है, तो वह परमेश्वर के ठहराये हुए के विरोध में काम कर रहा है।'' यानी मानवीय प्रबन्ध को न मानना परमेश्वर का ही सामना करना है।

''सामना'' शब्द *antitasso* (*anti* [''विरोध''] के साथ *tasso* [बन्द करना]) से लिया गया है। अध्याय 13 में पौलुस द्वारा यह *tasso* ''प्रबन्ध'' का तीसरा इस्तेमाल है। परमेश्वर ने मानवीय प्रबन्ध ''ठहराया।'' सरकारी अधिकारियों के बारे में हमें *tasso* (परमेश्वर के ''प्रबन्ध'' के अधीन रहना आवश्यक है)। यदि हम ऐसा करने से इनकार करते हैं तो इसका अर्थ यह है कि हम *tasso* (परमेश्वर के ''प्रबन्ध'') के विरुद्ध हैं। कॉफ़मैन का अवलोकन है:

> मसीह ने कभी दंगा नहीं करवाया, रोम के विरुद्ध यहूदियों को संगठित नहीं किया, सरकार की अलोचना नहीं की या यहूदियों के साथ नहीं मिला। ... बेशक यह सच है कि इतिहास के मार्ग पर उसकी पवित्र शिक्षाओं का सबसे गहरा प्रभाव था, पर यह खमीर की तरह रही न कि विस्फोट की तरह, परन्तु उसके प्रभाव ने खमीर की तरह काम किया न कि डायनामाइट की तरह।[22]

2. *दण्ड से बचने के लिए।* पौलुस ने सरकारी अधिकार के अधीन होने का दूसरा कारण दण्ड से बचना बताया। ''और सामना करने वाले दण्ड पाएंगे'' (आयत 2ख)। ''दण्ड'' ''न्याय'' के लिए सामान्य शब्द *krima* से लिया गया है। KJV में मिलने वाले शब्द ''damnation'' अति लगता है। NEB सम्भवतया निशाने के निकट है कि ''वे जो ... सामना करते हैं उन्हें स्वयं उस *दण्ड* के लिए जो उन्हें मिलने वाला है धन्यवाद करें।'' अगली आयत यह संकेत देती है कि पौलुस के दिमाग में मुख्यतया सरकारी अधिकारियों द्वारा दिया जाने वाला दण्ड था, परन्तु हम यकीन से ईश्वरीय दण्ड को निकाल नहीं सकते क्योंकि आज्ञा न मानने वाले परमेश्वर की ठहराई हुई संस्था के विरुद्ध बगावत कर रहे हैं।

आयत 3 में पौलुस ने विचार की अपनी रेखा को जारी रखा: ''क्योंकि हाकिम अच्छे काम[23] के नहीं, परन्तु बुरे काम के लिए डर [*phobos*] का कारण है; सो यदि तू हाकिम से निडर [*phobos*] रहना चाहता है, तो अच्छा काम कर और उस की ओर से तेरी सराहना होगी।'' फिलिप्स के अनुवाद में ''यदि तू इस चिन्ता से बचना चाहता है तो कानून का पालन करने वाला जीवन बिता'' है। आमतौर पर बुरी सरकारों में भी अच्छे लोगों को पसंद किया जाता है।

पौलुस ने आगे कहा, ''क्योंकि वह [सरकारी अधिकारी] तेरी भलाई के लिए परमेश्वर का सेवक है'' (आयत 4क)। सेवक शब्द *diakonos* से लिया गया है, जिससे डीकनों, एवैंजलिस्टों और कलीसिया में काम करने वालों के लिए इस्तेमाल किया गया है (रोमियों 12:7; 1 तीमुथियुस 3:10, 13; 4:6)। बेशक सरकारी प्रबन्ध ''परमेश्वर का सेवक'' वैसे ही नहीं है जैसे वे जिनका

अभी-अभी उल्लेख किया गया है। डीकनों और कलीसिया में काम करने वालों को मालूम है कि वे परमेश्वर की सेवा कर रहे हैं और यह वे सेवा मन से करते हैं। इसके विपरीत सरकारी अधिकारियों को आम तौर पर पता नहीं होता कि वे परमेश्वर के सेवक हैं और उन्होंने उस क्षमता में काम करने का कोई निर्णय नहीं लिया है। तौभी चाहे या अनचाहे, जाने या अनजाने में, परमेश्वर की प्रेरणा पाए हुए प्रेरणा के अनुसार मानवीय प्रबन्ध प्रभु का सेवक अर्थात ''तेरी भलाई के लिए परमेश्वर का सेवक'' है।

कई विरोध हो सकते हैं: ''क्या पौलुस को मालूम नहीं था कि अन्यायी सरकारी अधिकारी हो सकते हैं, कितनी बार वे भलाई के लिए नहीं बल्कि बुराई के सेवकों के रूप में काम करते हैं?'' हम यकीन से कह सकते हैं कि पौलुस को मालूम था कि न्याय करने वाले अनुपयुक्त हो सकते हैं और अक्सर होते हैं।

- कुरिन्थुस में रोमी हाकिम गलियो द्वारा उसके साथ अच्छा व्यवहार किया गया था (प्रेरितों 18:12-16); परन्तु इससे पहले फिलिप्पी में रोमी अधिकारियों द्वारा दुर्व्यव्यवहार किया गया था (प्रेरितों 16:19-39)।
- बाद में यरूशलेम में उसे रोमी सिपाहियों द्वारा हत्यारी यहूदी भीड़ से बचाया गया था (प्रेरितों 21:27-36) परन्तु कैसरिया में उसने रोमी जेल में दो साल बिताए (प्रेरितों 24:27)। इसलिए कि उसने एक भ्रष्ट रोमी अधिकारी को घूस नहीं दी (प्रेरितों 24:26)।
- इसके बाद भी कैसर के सामने अपील करने पर उसे यहूदियों के हाथों मरने से उसकी रोमी नागरिकता ने बचाया (प्रेरितों 25:9-12)। परन्तु (बाइबल से बाहर की परम्परा के अनुसार) उसके जीवन का अन्त उसके शरीर से उसके सिर को रोमी तलवार द्वारा अलग किए जाने से हुआ। (उसकी शहादत का पूर्वानुमान 2 तीमुथियुस 4:6-8 में लगाया गया था।)

अपने कुछ अनुभवों के बाद पौलुस ने यह क्यों कहा कि सरकारी अधिकारी ''भलाई के लिए ... सेवक है''? *क्योंकि आम तौर पर* यही सच होता है। आम तौर पर सरकारें अच्छे व्यवहार को पुरस्कार देतीं और बुरे व्यवहार को दण्ड देती हैं। ऐसा करना उनके हक में है। किसी और आधार पर काम करने की कोशिश करने वाली सरकार अधिक देर तक नहीं रह सकती।

आयत 4 में वापस आते हुए, हम पढ़ते हैं, ''परन्तु यदि तू बुराई करे, तो डर; क्योंकि वह [सरकारी प्रबन्ध] तलवार व्यर्थ लिए हुए नहीं और परमेश्वर का सेवक है; कि उसके क्रोध [*orge*] के अनुसार बुरे काम करनेवाले को दण्ड दे'' (आयत 4ख)। अध्याय 12 इस बात पर जोर देता है कि हम बदला न लें बल्कि ऐसे मामलों को परमेश्वर के हाथ में छोड़ दें (देखें 12:19)। इस जीवन में बुराई को दण्ड देने का परमेश्वर का एक ढंग अदालतों के द्वारा है।

''वह तलवार व्यर्थ लिए हुए नहीं'' शब्दों का अर्थ है कि कानून लागू करने वालों के हाथ में तलवारें केवल दिखाने के लिए नहीं होती थीं। (मेरे एक प्रोफेसर का कहना था, ''वे इनका इस्तेमाल अपनी ब्रेड पर मक्खन लगाने के लिए नहीं करते थे।'') इसके बजाय तलवार का

इस्तेमाल बुराई को रोकने के लिए किया जाता है। यह इस बात का संकेत है कि सरकारी अधिकारियों के लिए जिसे ''खतरनाक शक्ति'' कहा जाता है, उसका इस्तेमाल परमेश्वर के प्रबन्ध में ही है। कानून मनवाने के साधनों के बिना कोई कानून अच्छी सलाह से बढ़कर नहीं है।[24]

पौलुस का विषय बुराई को दण्ड देने के बार में है इसलिए मैं आयत 4 को यह पुष्टि करने के रूप में समझता हूं कि परमेश्वर मृत्यु दण्ड को मान्यता देता है। ''तलवार'' (*machaira*) हमारे पहले अध्ययों में आया था (8:35) और हमने देखा था कि खतरनाक मृत्यु और प्राणदण्ड को याद दिलाते हुए डरावना संकेत था। जेम्स डैनी ने लिखा है, ''बड़े जजों के द्वारा नहीं तो उनके सामने तलवार ले जाई जाती थी, जो जीवन और मृत्यु की शक्ति का प्रतीक थी जो उनके हाथ में होती थी।''[25] लुईस ने लिखा ''तलवार अधिकार का प्रतीक थीं,'' परन्तु ''इसके साथ मृत्यु दण्ड को लागू करने की शक्ति भी थी।''[26] बाइबल की कोई बात पढ़ने पर उससे पहले पूछे जाने वाले प्रश्नों में से एक यह होना चाहिए कि ''इसे पहली बार पढ़ने या सुनने वालों के लिए इसका क्या अर्थ था?'' रोमियों 13:4 के बारे में बॉब ई. एडम्स ने निष्कर्ष निकाला कि दुष्टों को दण्ड देने का अधिकार ''सबसे स्वाभाविक माध्यम होगा जो पौलुस के पाठकों ने इस आयत को दिया हो।''[27]

बहुत पहले की बात है जब परमेश्वर ने नूह को यह विश्वव्यापी निर्देश दिया: ''जो कोई मनुष्य का लहू बहाएगा, उसका लहू मनुष्य से ही बहाया जाएगा'' (उत्पत्ति 9:6क)। यह नियम मूसा की व्यवस्था का भाग बन गया (निर्गमन 21:12) और रोमियों 13 यह संकेत देता है कि यह नये नियम के साथ मेल खाता है। यह मृत्यु दण्ड के सभी सवालों को हल नहीं कर देता, जैसे यह कि ''मृत्यु दण्ड सबसे प्रभावी रुकावट है और/या सबसे सही दण्ड।''[28] मैं तो केवल इस बात पर ज़ोर दे रहा हूं कि रोमियों 13:4 के अनुसार सरकार द्वारा दिया जाने वाला मृत्यु दण्ड का नियम परमेश्वर की इच्छा के विपरीत नहीं है।

यहां पर आकर और उलझाने वाले सवाल खड़े होते हैं। परमेश्वर ने बुराई को दण्ड देने के लिए राज्य सरकार को बल का प्रयोग करने के लिए अधिकृत किया है, पर क्या एक *मसीही* उस बल का इस्तेमाल कर सकता है? अन्य शब्दों में, क्या एक मसीही राजनैतिक पद पा सकता है?[29] क्या मसीही व्यक्ति पुलिस में या सेना में भर्ती हो सकता है? इस प्रश्न के बारे में कालांतर में कई मसीही लोगों का कहना था कि नहीं। आज बहुतों (शायद अधिकतर) का उत्तर है, हां। उनके बारे में यह संकेत है कि हम में से अधिकतर लोग वर्तमान घटनाओं से उतना प्रभावित हुए हैं, जितना नये नियम द्वारा कही जाने वाली किसी बात से या जो नये नियम में नहीं कही गई। वर्षों से यह मुद्दा निजी विवेक पर छोड़ दिया जाता रहा है कि हर मसीही यह निर्णय ले कि उसके लिए परमेश्वर की इच्छा क्या है (रोमियों 14 इस बात पर फोकस करता है कि हमें उन साथी मसीही लोगों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए जिनके विचार हमारे विचारों से अलग हैं)।

ऐसे प्रश्नों पर चर्चा करते हुए हम अनगिनत कागज़ भर सकते हैं, पर रोमियों 13:4 में पौलुस की बात का उनसे कोई सम्बन्ध नहीं था। पौलुस यह ज़ोर दे रहा था कि देश के कानून का पालन करने की आवश्यकता का एक कारण यह है कि उसे न मानने पर आपको दण्ड दिया जाएगा।

3. *''विवेक की गवाही।''* यदि आप को भरोसा हो कि आप बिना पकड़े जाने के, बिना दण्ड पाने के कानून तोड़ सकते हैं तो क्या हो? आयत 5 में पौलुस ने इस सम्भावना को बताया: ''इसलिए अधीन रहना न केवल उस क्रोध से परन्तु डर से अवश्य है, बरन विवेक भी यही गवाही

देता है।'' विवेक हम सब के अन्दर दी गई परमेश्वर की वह बात है जो हमें सही और गलत में अन्तर करने में सहायता करता है।[30] कई लोग सड़क के नियमों का केवल इसलिए पालन करते हैं क्योंकि उन्हें चालान का डर होता है; कई लोग आयकर केवल इसलिए देते हैं क्योंकि उन्हें अधिकारियों का भय होता है।[31] पौलुस ने कहा कि ''हमें अधिकारियों की आज्ञा केवल इसलिए नहीं माननी चाहिए क्योंकि यह [ऐसा करना] सबसे सुरक्षित है, बल्कि इसलिए भी क्योंकि ऐसा करना *सही* है'' (रोमियों 13:5; फिलिप्स); क्योंकि हमसे *परमेश्वर* यही चाहता है कि हम करें। पौलुस की तरह हमें कोशिश करनी चाहिए कि ''परमेश्वर की, और मनुष्यों की ओर मेरा विवेक सदा निर्दोष रहे'' (प्रेरितों 24:16)।

अधिकार से जोड़ें! (13:6, 7)

1 से 4 आयतों में पौलुस ने मानवीय सरकार के साथ मसीही व्यक्ति के सम्बन्ध के बारे में सामान्य नियम तय किए: हमें देश के कानून का पालन करना चाहिए; हमें अच्छे नागरिक बनना चाहिए। 6 और 7 आयतों में प्रेरित अच्छे नागरिक में पाई जाने वाली खूबियों के बारे में निर्देश दिए हैं।

कर चुकाएं

आयत 6 कहती है, ''इसलिए [क्योंकि मानवीय सरकार परमेश्वर द्वारा ठहराई गई थी] कर [*phoros* से लिया गया है] भी दो, क्योंकि वे परमेश्वर के सेवक हैं, और सदा इसी काम में लगे रहते हैं।'' ''सेवक'' आयत 4 में अनुवाद हुए ''सेवक'' से अलग यूनानी शब्द से लिया गया है। यह *leitourgos* के बहुवचन रूप यानी ''याजकों की सेवा देने वालों के लिए सुरक्षित शब्द'' से लिया गया है।[32] इस तथ्य को रेखांकित करता है कि ''सांसारिक हाकिम जो अनजाने में सेवकों के रूप में काम करते हैं, ऐसे कामों को करते हैं जो परमेश्वर के आदेश से हैं।''[33]

''और सदा इसी काम में लगे रहते हैं'' से पता चलता है कि पौलुस ने क्या कहा (या उसका क्या अर्थ था) कि मानवीय सरकारों का क्या काम है: अपने नागरिकों की रक्षा करना और अपने नागरिकों को विशेष सेवाएं प्रदान करना जो वे अपने आप नहीं पा सकते। क्योंकि मानवीय सरकार परमेश्वर द्वारा स्थापित की गई होती है, क्योंकि सरकारी कर्मचारी (एक अर्थ में) परमेश्वर के उद्देश्य को ही पूरा कर रहे हैं, इसलिए हमें कर देने चाहिए। जॉन आर. डब्ल्यू. स्टॉट ने लिखा है कि लोग इस पर असहमत हैं कि हमें कितनी सरकार चाहिए (जो कर देने की राशि को तय करता है), परन्तु इस महत्व पर सब सहमत हैं ... कि ऐसी कुछ सेवाएं हैं, जो राज्य को दी जानी आवश्यक हैं, और इसलिए कर देना आवश्यक है।[34]

कर देने की शिक्षा इस चर्चा के बाद में बना विचार नहीं है। पिछली आयतों में पौलुस ने इस निष्कर्ष का आधार बना दिया था। जैसा कि इस पाठ के परिचय में ध्यान दिया गया था। यहूदी लोग रोम को कर देना पसन्द नहीं करते थे। पौलुस ने ज़ोर दिया कि कर दिया जाना चाहिए। यदि हम कर नहीं देते हैं तो हम सरकार को ही धोखा नहीं देते बल्कि अपना योगदान देने के लिए मुकरते भी हैं, बल्कि परमेश्वर की आज्ञा भी तोड़ रहे हैं।

एक और विरोध आम तौर पर पाया जाता है: ''पर यदि मैं कर देता हूं तो मैं उन सभी गलत

कामों में भागीदार होता हूं जो सरकार करती है!'' मैं आपको याद दिला दूं कि यीशु ने कहा था कि ''जो कैसर का है वह कैसर को और जो परमेश्वर का है वह परमेश्वर को दो'' (लूका 20:25)। इसके अलावा याद रखें कि पौलुस मूर्तिपूजक रोमी साम्राज्य को कर देने की बात कर रहा था। जो राजनैतिक भ्रष्टता और ऐसे अधिकारियों से भरी सरकार थी जो पैसे का दुरुपयोग करते थे। तौभी यीशु और पौलुस दोनों ने कहा कि कर दिए जाने चाहिए। हमारी ज़िम्मेदारी अपने कर देना है; उस धन का इस्तेमाल समझदारी से करना अधिकारियों का काम है। यदि वे अपनी जिम्मेदारी नहीं निभाते तो यह हमारे लिए कर न देने का बहाना नहीं है।

आयत 7 में पौलुस ने अपने विचार को फिर से जोड़ दिया। आयत का आरम्भ ''इसलिए हर एक का हक्क चुकाया करो'' शब्दों से आरम्भ होता है। संदर्भ में ''हर एक'' का अर्थ छोटे से छोटे से लेकर बड़े से बड़े यानी कम से कम महत्वपूर्ण से लेकर सबसे महत्व वाले अधिकारी ''चुकाया'' शब्द उसी मूल यूनानी शब्द से लिया गया है, जिसका इस्तेमाल यीशु ने ''जो कैसर का है वह कैसर को दो'' कहते हुए किया।

''हर एक का हक चुकाया करो; जिसे कर चाहिए, उसे कर दो; जिसे महसूल चाहिए, उसे महसूल दो'' (आयत 7क, ख)। ''कर'' आयत 6 में पाए जाने वाले और लूका 20:22 में यीशु से किए गए प्रश्न में इस्तेमाल होने वाले शब्द *phoros* से लिया गया है। *Phoros* का अर्थ ''अधीन देश द्वारा 'जज़िया' देना'' है।[35] ''महसूल'' *telos* से लिया गया है जिसका अर्थ है ''के गौण महत्व में, 'सार्वजनिक लक्ष्यों, टोल, टैक्स, आबकारी के लिए दिया जाने वाला।' ''[36] दोनों यूनानी शब्दों में अन्तर करना कठिन है। पौलुस ने सम्भवतया गुप्त करों के साथ-साथ सरकारी करों को भी लेते हुए *हर* कर को समेटने के लिए इनका इस्तेमाल किया होगा।[37] संदेश स्पष्ट है कि मसीही लोगों को कर अदा करना चाहिए।

सरकारी अधिकारियों के प्रति सम्मान दिखाएं

फिर पौलुस ने एक शर्त जोड़ी जो कइयों के लिए कर देने से भी बड़ी चुनौती है: ''जिससे डरना चाहिए, उससे डरो; जिसका आदर करना चाहिए उसका आदर करो'' (आयत 7ग)। ''डरना'' शब्द *phobos* से लिया गया है, जिसके अर्थ की कई परछाइयां हैं। यह वह शब्द है जिसका इस्तेमाल 3 और 4 आयतों में दण्ड के भय की बात करने के लिए किया गया, पर आयत 7 में इसमें अलग जोड़ दिया गया। ''आदर'' यहां इस विचार को बेहतर ढंग से व्यक्त करता है, देखें RSV; AB; मेकोर्ड। ''सम्मान'' *समय* से लिया गया है, जिसका अर्थ किसी कीमती चीज़ पर विचार करना है।[38] याद रखें कि इस संदर्भ में पौलुस सरकारी अधिकारियों की बात कर रहा था।

एक अन्तिम आपत्ति दर्ज कराई जा सकती है: ''पर मैं किसी विशेष सरकारी अधिकारी के प्रति सम्मान नहीं दिखा *सकता,* इसलिए मैं उसका आदर करने से इनकार *करता* हूं। वह बेईमान है और घटिया आदमी है!'' फिर मैं आपको याद दिलाता हूं कि पौलुस रोमी सरकार के अधिकारियों की बात कर रहा था जिसमें से अधिकतर बेहद भ्रष्ट और घटिया थे। जब पतरस ने कहा, ''राजा का सम्मान [*समय* से] करो'' (1 पतरस 2:17), तो उसका इशारा परमेश्वर को न मानने वाले रोमी सम्राट नीरो की ओर था। कह सकते हैं कि यदि आप व्यक्ति का सम्मान नहीं करते तो आप उस पद का तो सम्मान कर ही सकते हैं।[39] अमेरिका के कई ऐसे राष्ट्रपति रहे हैं

जिन्हें मैं निजी तौर पर सम्मान नहीं देता, पर यदि उनके इस कमरे में आने पर मैं मौजूद होता तो मैं उनके पद के सम्मान के कारण उठकर खड़ा हो जाता।

आयत 7 को छोड़ने से पहले, मैं यह ध्यान दिलाना चाहता हूं कि यह प्रासंगिकता अन्य आधिकारिक पदों के लिए माता-पिता, स्कूल के अधिकारी, काम देने वाले, ऐल्डर और पतियों के लिए इस्तेमाल की जा सकती है। हर समाज में ऐसे लोग होते हैं जो अधिकार का सम्मान नहीं करते या बहुत कम करते हैं। ऐसे लोगों को पौलुस कहता, ''उन्हें उनका *पूरा* हक चुकाओ: ... जिनका आदर करना चाहिए [उन्हें आदर दो]; जिन्हें सम्मान [देना चाहिए] उन्हें सम्मान दो।''

सारांश

रोमियों 13:1-7 में हमें पौलुस की शिक्षा को कैसे संक्षिप्त करना चाहिए? विलियम बार्कले ने इस पद को इस प्रकार संक्षिप्त किया:

> पौलुस ने राज्य में परमेश्वर के हाथ का सामान देखा, जो संसार को उथल पुथल से बचाता है। जो लोग राज्य का प्रबन्ध कर रहे थे वे उस महान कार्य में अपना योगदान दे रहे थे। जाने या अनजाने में वे परमेश्वर का कार्य कर रहे थे, और मसीही व्यक्ति का दायित्व था कि वह उन्हें सहयोग दे न कि उस काम में रुकावट बने।[40]

बेशक पौलुस ने रोमियों 13:1-7 में मानवीय सरकार के साथ मसीह के सम्बन्ध के विषय को बढ़ाया नहीं। उदाहरण के लिए इस आयत में उसने 1 तीमुथियुस 2:1, 2 की तरह रोमी अधिकारियों के लिए प्रार्थना करने की बात नहीं की![41] 1 तीमुथियुस 2 को रोमियों 13 से जोड़ने पर कहा गया है कि सरकार के प्रति मसीही व्यक्ति की मूल ज़िम्मेदारी, ''देना, प्रार्थना करना और मानना'' है। इससे आगे यह अपने-अपने विवेक की बात बन जाती है।[42]

प्रचारकों तथा सिखाने वालों के लिए नोट्स

आप इस पाठ को यह ज़ोर देते हुए खत्म कर सकते हैं कि *परमेश्वर के* राज्य का भाग होना किसी भी संसारिक प्रबन्ध का भाग होने से महत्वपूर्ण है। हम जल और आत्मा से जन्म लेने के द्वारा प्रभु के राज्य (कलीसिया) का भाग बनते हैं (यूहन्ना 3:3, 5)। यह तब होता है जब यीशु मसीह के साथ जल में ''दफ़नाये'' जाकर डुबोए जाते हैं (प्रेरितों 2:38; रोमियों 6:3, 4)। उस समय परमेश्वर हमें अपने प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश कराता है (कुलुस्सियों 1:13)।

इस पाठ के वैकल्पिक शीर्षक ''अच्छे नागरिक होने पर'' और ''अच्छे नागरिक कैसे बनें'' हो सकते हैं। रोमियों 13:1-7 की रूपरेखा इस प्रकार हो सकती है: सरकार की आज्ञाकारिता (आयतें 1, 2), सरकार के उद्देश्य (आयतें 3-5) और सरकार के दायित्व (आयतें 6, 7)।[43]

इन वचनों पर सिखाते समय नागरिक सरकार पर ध्यान देने के बजाय आप ''अधिकार का सम्मान'' शीर्षक का इस्तेमाल करते हुए सामान्य अधिकार की बात कर सकते हैं। मैंने आयत 7 के आरम्भ में इस पर कुछ टिप्पणियां शामिल की हैं। दी स्टुअर्ट ब्रिस्को ने इस वचन पर अपनी टिप्पणियों को ''अधिकार पर मसीही व्यवहार'' नाम दिया है। उसके मुख्य शीर्षक थे, अधिकार

के नियम, ''अधिकार का उद्देश्य'' और ''अधिकार की समस्याएं।''[44]

कोय रोपर ने ''हाउ टू लिव इन ए होस्टाइल वर्ल्ड'' शीर्षक के प्रवचन में पूरा रोमियों 13 समझा दिया। उसके मुख्य प्वाइंट से (1) ''सरकार के प्रति: सम्मान के साथ'' (आयतें 1-7); (2) ''अपने पड़ोसियों के प्रति: प्रेम के साथ'' (आयतें 8-10); (3) ''संसार के प्रति: शुद्धता के साथ'' (आयतें 11-14)।[45]

क्योंकि 13:5 में ''गवाही के कारण'' है इसलिए विवेक पर सामान्य पाठ या प्रवचन के लिए यह एक और अच्छी जगह होगा। रोमियों 14 में बेशक ''विवेक'' पर शब्द का इस्तेमाल नहीं है, पर आप अपनी चर्चा में उस अध्याय से आयतें शामिल कर सकते हैं।

टिप्पणियां

[1]उस समय रोमी सरकार यहूदियों और मसीहियों में कोई अन्तर नहीं करती थी। प्रेरितों 18:2 में केवल यहूदियों के दस्तावेजों से संकेत मिलता है कि रोम में से यहूदियों और मसीही लोगों को निकाला गया था। [2]कई लेखकों ने सुझाव दिया है कि पौलुस ने रोमियों 13:1-7 नहीं लिखा, परन्तु इन आयतों को किसी और लेखक द्वारा लिखा गया और इस पत्र में मिला दिया गया। इसका कोई दस्तावेजी सबूत नहीं है। यह हर मसीही के लिए आवश्यक व्यावहारिक निर्देश का भाग है और कुछ विषय अधिकार के आज्ञापालन से अधिक व्यावहारिक हैं। [3]डब्ल्यू. ई. वाइन, मैरिल एफ़ अंगर एंड विलियम व्हाइट, जूनि., *वाइन्स 'स कम्पलीट एक्सपोज़िटरी डिक्शनरी ऑफ़ ओल्ड एंड न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स* (नैशविल्ले: थॉमस नेल्सन पब्लिशर्स, 1985), 45. [4]वही, 33-34. [5]पृष्ठभूमि की जानकारी के लिए, देखें यशायाह 44:28-45:7. [6]पृष्ठभूमि की जानकारी दानिय्येल 2:21, 37, 38; 4:17-35 दी गई है। [7]आप ऐसे विशेष उदाहरण जोड़ सकते हैं, जिनसे आप के सुनने वाले परिचित हों। अमेरिका में हम हिटलर, स्टैलिन या और आधुनिक तानाशाहों को जोड़ सकते हैं। [8]विशेषकर उसने ऐसा कब और कैसे किया, हम नहीं जानते। [9]जेम्स बर्टन कॉफ़मैन, *कमैंट्री ऑन रोमन्स* (ऑस्टिन, टैक्सस: फर्म फाउंडेशन पब्लिशिंग हाउस, 1973), 446. [10]जैक पी. लुईस, *एक्सजेसिस ऑफ़ डिफिकल्ट पैसेज* (सरसी, आरकैंसा: रिसोर्स पब्लिकेशंस, 1988), 95.

[11]इस वाक्य को जहां आप रहते हैं, उसके हिसाब से विस्तार दें। [12]आप इस विचार में जोड़ सकते हैं: यदि मानवीय सरकारें वैसा काम नहीं करती, जैसा उन्हें करना चाहिए (परमेश्वर के सेवकों के रूप में), तो इसका अर्थ यह नहीं है कि मसीही लोगों को वह न करने का बहाना मिल गया, जो उन्हें करना चाहिए। [13]पृष्ठभूमि की जानकारी के लिए पढ़ें यशायाह 10:5-12. [14]न्याय की रोमी अवधारणा अच्छी थी, साम्राज्य में शांति बनाए रखने के रोम के प्रयास की तरह ही। रोमी सड़कों से साम्राज्य के हर भाग में यातायात सम्भवतया हुआ। पौलुस ने सुसमाचार को फैलाने के लिए इन लाभों का लाभ उठाया। [15]आर. सी. बेल्ल, *स्टडीज़ इन रोमन्स* (ऑस्टिन, टैक्सस: फर्म फाउंडेशन पब्लिशिंग हाउस, 1957), 146. [16]पौलुस को कैसरिया में दो साल (प्रेरितों 24:27), और रोम में कम से कम दो और साल कैद रखा गया था (प्रेरितों 28:30)। [17]''व्यक्ति'' का अनुवाद *psyche* से किया गया है 1 पतरस 3:20 की तरह यहां *psyche* का अर्थ केवल लोग हैं। [18]''प्रधान'' *huperecho* (*huper* [''के ऊपर''] के साथ *echo* [''होना'']) से लिया गया है। इस शब्द का मूल अर्थ ''ऊंचा'' है (देखें KJV)। [19]वाइन, 606. इस शब्द का अनुवाद आम तौर पर ''सौंपा'' हुआ है। [20]ब्रूस बार्टन, डेविड वीरमन एंड नील विल्सन, *रोमन्स,* लाइफ एप्लीकेशन बाइबल कमैंट्री (व्हीटन, इलिनोइस: टिंडेल हाउस पब्लिशर्स, 1992), 246.

[21]जिम्मी एलन, *रोमन्स, दि क्लीयरेस्ट गॉस्पल ऑफ़ ऑल* (सरसी: आरकैंसा, लेखक द्वारा, 2005), 266. [22]कॉफ़मैन, 447-48. [23]यहां यूनानी में मूलतया इसका अर्थ ''अच्छा काम'' है। [24]अल्वा जे. मैकलेन से लिया गया; जिम्म डाउनसैंड, *रोमन्स: लेट जस्टिस रोल* (एलजिन, इलिनोइस: डेविड सी. कुक पब्लिशिंग कं., 1988), 90 में उद्धृत। [25]जेम्स डेन्नी, *द एक्सपोज़िटर 'स ग्रीक टैस्टामेंट में सेंट पॉल 'स एपिस्टल टू द रोमन्स,* अंक 2 (लंदन: हॉडुर एंड स्टाउटन, 1901; रिप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1979), 697. [26]लेविस, 96. [27]''स्टडीज़ इन रोमन्स,'' *साउथ वेस्टर्न, जरनल ऑफ़ थियोलॉजी* 19 (फॉल 1976): 63 में बॉब ई. एडम्स,

''रिसपांसिबल विलिंग इन कम्युनिटी सैटिंग (रोमियों 12-16)।''[28]वही।[29]मेरा मानना है कि हमें राजनैतिक पदों की आवश्यकता है, परन्तु यह एक विचार है। राजनैतिक पद केवल मसीही नियमों से समझौता करने का प्रलोभन हो सकते हैं।[30]*रोमियों, 1* पुस्तक में पाठ ''अन्यजातियां, विवेक और मिशन कार्य (2:14, 15)'' पाठ में विवेक पर चर्चा की समीक्षा करें।

[31]इस वाक्य को जहां आप रहते हैं, वहां की परिस्थितियों से मेल खाने के लिए बदल लें।[32]डी. स्टुअर्ट ब्रिस्को, *मास्टरिंग द न्यू टैस्टामेंट: रोमन्स,* दि कम्युनिकेटर'स कमैंट्री सीरीज़ (डलास: वर्ड पबिलशिंग, 1982), 232. रोमियों 12:1 *leitourgos* के क्रिया रूप का अनुवाद ''आराधना सेवा'' किया गया है।[33]वाइन, 410. [34]जॉन आर. डब्ल्यू. स्टॉट, *दि मैसेज ऑफ़ रोमन्स: गॉड'स गुड न्यूज़ फ़ॉर द वर्ल्ड,* दि बाइबल स्पीक्स टुडे सीरीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटर-वर्सिटी प्रैस, 1994), 346. [35]वाइन, 643. [36]वही, 142. मत्ती 17:25 में इसी शब्द का इस्तेमाल किया गया है, जब यीशु ने पतरस से कर देने को कहा।[37]विलियम बार्कले ने उन करों की एक सूची दी जो नये नियम के समय में दिए जाने आवश्यक थे (विलियम बार्कले, *न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स* [फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1974], 175)। [38]वाइन, 310. [39]प्रेरितों 23:1-5 में पौलुस ने व्यक्ति का सम्मान न कर पाने पर उसके पद का सम्मान किया।[40]बार्कले, 174.

[41]किसी मूर्तिपूजक सरकार के लिए प्रार्थना करने की आज्ञा के एक और उदाहरण के लिए, देखें यिर्मयाह 29:7. [42]कई लोगों का विचार था कि मसीही लोगों को वोट भी नहीं डालना चाहिए। एक साम्प्रदायिक डिनोमिनेशन तो झण्डे को सलामी देने से भी इनकार करती है। मेरे विचार से मसीही लोगों को चाहिए कि जहां तक परमेश्वर की इच्छा का उल्लंघन न हो या प्रभु और उसकी कलीसिया के प्रति समर्पण से उनका ध्यान न हटता हो, उन्हें सरकार के मामलों में शामिल होना चाहिए। मैं फिर कहता हूं कि यह मेरा अपना विचार है।[43]टाउनसेंड, 89 से लिया गया।[44]ब्रिस्को, 231-36. [45]12 नवंबर 2000 को वालनट ग्रोव चर्च ऑफ़ क्राइस्ट, सवन्नाह, टेनिसी को दिया गया कोय रोपर का प्रवचन।

शैतान और सरकारें

मानवीय सरकार के सम्बन्ध में कुछ विशेष टिप्पणियां शायद सही होंगी। पहले तो यह कि हमें इस बात में सचेत होने की आवयकता है कि शैतान आमतौर पर सरकारों का इस्तेमाल अपने उद्देश्यों के लिए करता है। ऐसा होने के बावजूद अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए परमेश्वर स्थिति पर नियन्त्रण रख सकता है। उदाहरण के लिए, शैतान ने यीशु को मृत्यु देने के लिए यहूदी और रोमी अधिकारियों का इस्तेमाल किया। तौभी परमेश्वर ने आपा नहीं खोया क्योंकि क्रूसारोहण उसकी सनातन योजना का महत्वपूर्ण भाग था। इसी प्रकार शैतान ने पौलुस और सीलास को जेल में डालने और तंग करने के लिए रोमी अधिकारियों का इस्तेमाल किया, परन्तु परमेश्वर ने उस अवसर का इस्तेमाल दारोगे और उसके घराने को बदलने के लिए किया (प्रेरितों 16:16-34)।

एक अन्तिम उदाहरण पर विचार करें: कोई संदेह नहीं कि शैतान को लगा कि पौलुस को कई सालों कैद में रखने के लिए रोमी अधिकारियों का इस्तेमाल करके वह उसे शांत करा रहा है। परन्तु पौलुस की कैद से उसे हाकिमों और राजा के सामने वचन सुनाने का अवसर मिल गया (प्रेरितों 24:24, 25; 25:23; 26:1-29)। फिर पौलुस को रोम में ले जाया गया जहां उसने एक कैदी के रूप में लोगों को सिखाया और प्रचार किया, जिसका परिणाम यह हुआ कि सुसमाचार कैसर के घराने तक भी पहुंच गया (फिलिप्पियों 4:22)। रोमियों 13:1-7 में भलाई पैदा करने के लिए शैतानी सरकारों के साथ परमेश्वर के निपटने के ढंग या यह कि उनके बावजूद वह अपनी योजनाओं को कैसे अंजाम दे सकता है, पौलुस का उद्देश्य नहीं था। प्रेरित तो सामान्य नियम की पुष्टि कर रहा था कि परमेश्वर ने मानवीय सरकार को ठहराया और इसका इस्तेमाल वह अपने उद्देश्यों के लिए करता है।

मैं एक ऐसे देश में रहता हूं, जहां सरकारी अधिकारियों का सम्मान करना और उनके अधीन रहना तुलनात्मक रूप से आसान है, परन्तु मैं जानता हूं कि कई देशों में पौलुस के निर्देशों के साथ पूरा उतरना अधिक कठिन है। मेरी इच्छा है कि मैं आपके हर प्रश्न का उत्तर दे सकता, परन्तु नहीं दे सकता हूं। मैं केवल इतना कर सकता हूं कि जितना हो सके, आपके लिए पौलुस की शिक्षा को स्पष्ट कर दूं। अपनी परिस्थिति में इसे लागू करना आपका काम है। परमेश्वर आपके प्रयास में आपके साथ हो।